संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : १६ ● १६ मई २०१७ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष पंचमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११८

आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन से ही दयानन्द जी का सपना सकार हो सकेगा

आर्य समाज स्थापना काल में धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्डवाद, असमानता, जन्मगत जाति व वर्ण व्यवस्था का विरोधी रहा है। आर्य समाज के प्रयास के बाद भी आज तक जन्मगत जाति व वर्ण व्यवस्था ही प्रचलित है। जबकि वेद, मनुस्मृति, गीता आदि सभी धर्म शास्त्र कर्म के आधार पर ही वर्ण व्यवस्था को स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार देशी तथा विदेशी विद्वानों के वेदों की अपने-अपने तरीके से व्याख्या करके मानवता विरोधी एवं घृणा का पात्र बना दिया है। बाजार में उपलब्ध मनुस्मृति जो प्रचलन में है अनेक प्रक्षेप जोड़ कर दूषित कर दिया है। यही नहीं भारतीय इतिहास जो आज विद्यालयों/विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है उसमें आर्यों का बाहर से आना पढ़ाया जाता है। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में समानता नहीं है जबकि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सत्यार्थ प्रकाश में राजा-रंक के बच्चों के लिए एक सी शिक्षा व्यवस्था की बात कहते हैं कहने का तात्पर्य यह है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में घोर असमानता हैं राष्ट्र के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाजियों की मुख्य भूमिका रही है। सामाजिक कुरीतियों शराब बन्दी के लिए, जाति प्रथा उन्मूलन के लिए समय समय पर आंदोलन, धरने, प्रदर्शन किये थे। स्वामी श्रद्धानन्द, श्री संतराम बी०ए० आदि अनेक महानुभावों ने जाति तोड़ो आन्दोलन चलाया था परिणामस्वरूप तत्कालीन आर्यजनों के अपने नाम के सामने उपनाम (जन्मजाति) लिखना छोड़ दिया था सभी ने अपने नाम के साथ "आर्य" लिखना प्रारम्भ कर दिया था। लेकिन आर्य समाजों में विपरीत स्थिति है जो चिंता का विषय है।

विचारणीय विन्दु यह है कि आर्षशास्त्रों पर आधारित व्यवस्था कब लागू होगी। जिन आर्षग्रन्थों को प्रक्षेप जोड़कर तथा त्रुटिपूर्ण व्याख्या करके दूषित किया गया है। अनुसंधान व शोध के बाद प्रक्षेपों के हटाने के लिए कार्यवाही कब से प्रारम्भ होगी। प्रसन्नता की बात है कि एक संगठन भारतीय इतिहास के पुर्नलेखन की दिशा में रचनात्मक कार्य कर रहा है। मैं मानता हूँ कि इस दिशा में कार्य के लिए अनुकूल समय है।

वेद आधारित (कर्म के आधार पर) वर्ण व्यवस्था लागू करने के लिए आवश्यक है जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए भारत सरकार से माँग की जाय कि संसद में विधेयक लाकर जाति व्यवस्था को समाप्त करें। धर्म समानता की बात करते हैं तथा जाति प्रथा के विरोधी हैं। खेद का विषय है कि न्यायालय जन्म आधारित जाति व्यवस्था की पुष्टि करते हैं दूसरे धर्म को स्वीकार करके उसी धर्म में शादी करने के बाद भी उनको जन्म आधारित जाति में रखना न तो धार्मिक दृष्टि से उचित हैं और न ही न्याय संगत है अन्य सभी धर्म स्वीकार करने के बाद (कुरान-बाईबिल पर ईमान लाने के बाद) उसे कैसे जन्मजाति के आधार को मान्यता दी जाती है। इस सम्बन्ध में केन्द्र सरकार से अनुरोध किया जाये कि वर्तमान में व्यवस्था के लिए गुरुकुलीय पद्धति को प्रचलन में लाया जाय। केन्द्र व राज्य सरकार समान शिक्षा व्यवस्था का कड़ाई से पालन करें। इन्हीं गुरुकुलों में धार्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था की जाये निर्धन - अमीर, शहरी-ग्रामीण अधिकारी कर्मचारी, बड़े भूस्वामी -मजदूर के बच्चों को समान परिवेश में शिक्षा मिले तभी आर्य समाज का उद्देश्य एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सपना साकार होगा।

वेदामृतम्

कुविन्मां गोपां करसे जनस्य[११], कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन्[११]।
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य[१२], कुविनमे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः[११]।।

ऋग् ३.४३.५

हे मेरे मनोमन्दिर के देव परमात्मन्! आप 'मघवा' हैं, परम सम्पत्तिशाली हैं। आपके पास वह सद्गुणों का परम ऐश्वर्य विद्यमान है, जिसे कोई हर नहीं सकता। आप 'ऋजीषी' हैं, ऋजुता के इच्छुक हैं, सरल व्यवहार के पक्षधर हैं। जहाँ आप छल-छिद्र देखते हैं, उसके हृदय में वास नहीं करते, अपितु वहां से कोसों दूर चले जाते हैं। हे परमेश! मैं ऋजु होकर, अत्यन्त सरलता और विनीत भाव धारण कर, आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझमें ऐसी शक्ति भर दीजिए कि मैं जनसमुदाय की रक्षा कर सकूँ। ऐसी शक्ति मुझमें भरपूर भर दीजिए, जिससे में कभी जन-सेवा से विरत न होऊँ। हे देवाधिदेव! आप मुझे राजा बना दीजिए, दिव्य गुणों से राजमान कर दीजिए। मुझे ऐसा सामर्थ्य भी प्रदान कीजिए कि मैं प्रजाओं का राजा बनने योग्य हो सकूँ। तब जनता मुझे स्वयं 'राजा' का पद देगी। मेरा अहोभाग्य होगा कि मुझे राजा के रूप में राष्ट्र की सेवा का अवसर प्राप्त होगा। राजा मैं अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं, किन्तु जनता-जनार्दन की सेवा के लिए ही बनना चाहता हूँ। मुझे इसका भी आग्रह नहीं है कि आप मुझे सचमुच राजगद्दी पर बैठाकर ही राजा बनायें। मुझे तो आप बस सेवाव्रत के राजत्व से भासित कर दीजिए, तब जनता मुझे स्वयं जन-सम्राट कहने लगेगी, और अपना हृदय-हार बना लेगी।

हे परम कृपालु! आप ऐसी कृपा कीजिए कि मैं दिव्य ज्ञान-रूप सोमरस का पान करने वाला विश्वामित्र ऋषि बन जाऊँ, मेरे अन्दर आत्मा तथा इतर वस्तुओं को हस्तामलकवत् साक्षात् करने वाले ऋषि की दिव्य दृष्टि उदित हो जाए, मैं ऋषि के तुल्य इन्द्रियजयी और काल-जयी हो जाऊँ। हे इन्द्र! हे जगदीश्वर! आप मुझे मुक्ति का वह अलौकिक परमानन्द-रूप वसु भी प्रदान कीजिए, जिसके सम्मुख अन्य सब लौकिक वसु तुच्छप्राय सिद्ध होते हैं। हे प्रभु! इन समस्त प्रार्थित वस्तुओं में जिस समय जो वस्तु हितकर हो, उस समय वह वस्तु प्रदान कर मेरा कल्याण कीजिए। यदि मैं इस योग्य हूँ कि सब वस्तुओं को इकट्ठा सम्भाल सकता हूँ, तो सब वस्तुएं एकसाथ मुझे देकर गौरवान्वित कीजिए। यही मेरी आपसे प्रार्थना है।

साभार - वेदमञ्जरी

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिक्षा का समान अधिकार सबको मिले !

अक्सर यह सवाल उठता है कि स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का नारा फ्रांस में ही सबसे पहले क्यों लगा? गैर बराबरी के विरुद्ध क्रांति फ्रांस से कहीं अधिक बदतर थी? इन सबके पीछे एक ही कारण था और वह था फ्रांस की उत्तम शिक्षा व्यवस्था और ज्ञान का प्रसार। फ्रांस में रूसो, वाल्तेयर जैसे विचारकों की शिक्षा ने मानवीय अधिकार, प्रजातंत्र और समानता के आदर्श के प्रति जनता को अधिक सचेत और जागरूक बनाया। शिक्षा को लेकर भारत में भी एक लंबे समय से संघर्ष किया जाता रहा है, फिर भी यहां का समाज नहीं बदला। इस सिलसिले में इलाहाबाद उच्च न्यायलय के १६ अगस्त, २०१५ के निर्णय में न्यायाधीश ने कहा था कि प्रदेश की स्कूली शिक्षा तभी सुधर सकती है जब मंत्रियों और अफसरों के बच्चे भी सरकारी स्कूलों में पढ़ेंगे। अदालत का आदेश था कि जो भी अफसर, मंत्री या कर्मचारी सरकारी कोष से वेतन लेते हैं उन्हें अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाना अनिवार्य होगा। अभी वे ही बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं जो गरीब हैं। जब अधिकारियों के बच्चे भी इन स्कूलों में पढ़ेंगे तो सरकार को इन्हें बेहतर बनाना ही पड़ेगा। न्यायाधीश ने प्रदेश के मुख्य सचिव को हिदायत भी दी थी कि इस काम के लए वे जो भी तरीका अपनाएं उसकी पूरी रिपोर्ट छह महीनों के भीतर जमा करें। साथ ही जो इस निर्णय का पालन नहीं करे, सरकार उसके खिलाफ दंड का प्रावधान सुनिश्चित करे। उस समय तत्कालीन अखिलेश सरकार से यह उम्मीद थी कि वह गैर बराबरी दूर करने वाले इस आदेश का पालन करने के लिए कोई कदम जरूर उठाएगी। ऐसा नहीं हुआ। देखना है कि योगी सरकार क्या करती है, जो राज्य की कायाकल्प कर देने का वादा कर रही है?

इलाहाबाद उच्च न्यायाल की बातों में कुछ नया नहीं था। १८८२ में ज्योतिबा फुले ने हंटर आयोग को दी गई अपनी रिपोर्ट में कहा था कि शिक्षा के मामले में ब्रिटिश सरकार केवल उच्च जातियों की ही मदद करती आ रही है, जबकि सरकार की आय मुख्यतः निम्न जातियों के परिश्रम से होती है। १६११ में जब गोखले ने इम्पीरियल असेंबली के समाने मुफ्त और अनिवार्य स्कूली शिक्षा का बिल रखा तो उसका काफी विरोध हुआ था। वर्धा में आयोजित १६३७ के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में गाँधी जी ने तत्कालीन कांग्रेस शासित सात प्रांतों में अनिवार्य और मुफ्त स्कूली शिक्षा लाने की पूरी कोशिश की थी, मगर असफल रहे। आजादी के बाद डॉ० बी.आर. अम्बेडकर ने १४ वर्ष की आयु तक मुफ्त अनिवार्य शिक्षा को भारतीय संविधान का अंग बनाया। शिक्षा के जरिये गैर बराबरी दूर करने के लिए १६६६ में कोठारी आयोग ने 'पड़ोस स्कूल' की अवधारणा दी। अर्थात प्रत्येक इलाके का अपना स्कूल होगा जिसमें उस इलाके में रहने वाले सभी लोगों के लिए यह जरूरी होगा कि वे अपने बच्चों को उसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजेंगे जो उनके इलाके के लिए निर्धारित किया गया है। प्रवेश में गरीब–अमीर, जाति–धर्म, मालिक–मजदूर, जमींदार–किसान आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया जायेगा। १६६८ में बनी देश की पहली शिक्षा समिति ने कोठारी के विचारों का समर्थन किया। १६८६ में बनी दूसरी शिक्षा समिति और १६६२ की संशोधित समिति ने भी इसका अनुमोदन किया। जयप्रकाश नारायण ने भी कोठारी आयोग द्वारा प्रतिपादित पड़ोस स्कूल की अवधारण के लिए आवाज उठाई। दुख की बात है कि इतना सबकुछ होने के बाद भी स्थिति नहीं बदल रही है।

— सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

प्रश्न– कौन सत्य और कौन मिथ्या है?

उत्तर– ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसीरिति।।

यह गह्यसूत्रादि का वचन है। जो ऐतरेय, शतपथादि ब्राह्मण लिख आये उन्हीं के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी पांच नाम हैं, श्रीमद्भागवतादि का नाम पुराण नहीं।

प्रश्न– जो त्याज्य ग्रन्थों में सत्य है उसका ग्रहण क्यों नहीं करते?

उत्तर– जो–जो उनमें सत्य है सो–सो वेदादि सत्य शास्त्रों का है और मिथ्या उनके घर का है। वेदादि सत्य शस्त्रों के स्वीकार में सब सत्य का ग्रहण हो जाता है। जो कोई इन मिथ्या ग्रन्थों से सत्य का ग्रहण करना चाहे तो मिथ्या भी उस के गले लिपट जावे। इसलिए 'असत्यमिश्रं सत्यं दूरतस्त्याज्यमिति' असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे छोड़ देना चाहिए जैसे विषयुक्त अन्न को।

प्रश्न– तुम्हारा मत क्या है?

उत्तर– वेद अर्थात् जो–जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है। उस–उस का हम यथावत् करना, छोड़ना मानते हैं जिसलिये वेद हम को मान्य है इसलिये हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को विशेष आर्य्यों को ऐकमत्य होकर रना चाहिये।

प्रश्न– जैसा सत्यासत्य और दूसरे ग्रन्थों का परसपर विरोध है वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जेसे सृष्टिविषय में छः शास्त्रों का विरोध है—मीमांसा कर्म, वैशेषिककाल, न्याय परमाणु, योग पुरूषार्थ, सांख्य प्रकृति और वेदान्त ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है, क्या यह विरोध नहीं है?

उत्तर– प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे चार शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी और इन में विरोध नहीं कयोंकि तुम को विरोधाविरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुम से पूछता हूं कि विरोध किस स्थल में होता है? क्या एक विषय में अथवा भिन्न–भिन्न विषयों में?

प्रश्न– एक विषय में अनेकों का परस्पर विरूद्ध कथन हो तो उस को विरोध कहते हैं यहां भी सृष्टि एक ही विषय है।

उत्तर– क्या विद्या एक है वा दो? एक है। जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिष आदि के भिन्न विषय क्यों हैं? जैसा एक विद्या में अनेकविद्या के अवयवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न–भिन्न छः अवयवों का छः शासत्रों में प्रतिपादन करने से इन में कुछ भी विरोध नहीं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग वियोगादि का पुरूषार्थ, प्रकृति के गुण और कुंभार कारण हैं। वैसे ही सृष्टि का का जो कर्म कारण है उस की व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरूषार्थ की व्याख्या योग में, तत्तवों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में और निमित्तकारण जो परमेश्वर है उस की व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इस से कुछ भी विरोध नहीं जैसे वैद्यकशास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधिदान और पथ्य के प्रकरण भिन्न–भिन्न कथित हैं परन्तु सब का सिद्धान्त रोग की निवृत्ति हैं। वैसे ही सृष्टि के छः कारण हैं। इन में से एक–एक कारण की व्याख्या एक–एक शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ भी विरोध नहीं। इस की विशेष व्याख्या सृष्टिप्रकरण में कहेंगे।

जो विद्या पढ़ने पढ़ाने के विघ्न हैं उनको छोड़ देवें। जैसा कुसंग अर्थात् दुष्ट विषयी जनों का संग, दुष्टव्यसन जैसा मद्यादि सेवन और वेश्यागमनादि बाल्यावस्था में विवाह अर्थात् पच्चीस वर्षों से पूर्व पुरुष और सोलहवें वर्ष से पूर्व स्त्री का विवाह हो जाना, पूर्ण ब्रह्मचर्य न होना राजा, माता, पिता और विद्वानों का प्रेम वेदादि शास्त्रों के प्रचार में न होना, अतिभोजन, अति जागरण करना, पढ़ने पढ़ाने परीक्षा लेने वा देने में आलस्य वा कपट करना, सर्वोपरि विद्या का लाभ न समझना, बल, बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य, राज्य, धन की वृद्धि न मानना, ईश्वर का ध्यान छोड़ अन्य पाषाणदि जड़ 'मूर्ति के दर्शन–पूजन में व्यर्थ काल खोना, माता, पिता अतिथि और आचार्य विद्वान, इन को सत्यमूर्ति मान कर सेवा सत्संग न करना, वर्णाश्रम के धर्म को छोड़ ऊर्ध्वपुण्ड्र,तिलक, कण्ठी, मालाधारण, एकादशी, त्रयोदशी आदि व्रत करना, काश्यादि तीर्थ और राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती, गणेशादि के नामस्मरण से पाप दूर होने का विश्वास, पाखण्डियों के उपदेश से विद्या पढ़ने में अश्रद्धा का होना, विद्या धर्म योग परमेश्वर की उपासना के बिना मिथ्या पुराणनामक भागवतादि की कथादि से मुक्ति का मानना, लोभ से धनादि में प्रवृत्ति होकर विद्या में प्रीति न रखन, इधर–उधर व्यर्थ घूमते रहना इत्यादि मिथ्या व्यवहारों में फंस के ब्रह्मचर्य और विद्या के लाभ से रहति होकर रोगी और मूर्ख बने रहते हैं।

आजकल के सम्प्रदायी और स्वार्थी ब्राह्मण आदि जो दूसरों को विद्या सत्संग से हटा और अपने जाल में फंसा के उन का तन, मन, धन नष्ट कर देते हैं और चाहते हैं कि जो क्षत्रियादि वर्ण पढ़ कर विद्वान हो जायेंगे तो हमारे पाखण्डजाल से छूट और हमारे छल को जानकर हमारा अपमान करेंगे इत्यादि विघ्नों को राजा और प्रजा दूर करके अपने लड़कों और लड़कियों को विद्वान् करने के लिए तन, मन, धन से प्रयत्न किया करें।

क्रमशः अगले अंक में ....

धरोहर.... आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक...

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

परोपकारी पत्रिका के माध्यम से यह दुःखद समाचार पढ़ा, पढ़कर मन पर आघात लगा। एक देवदयानन्द का दीवाना अहर्निश आर्य समाज के लिए कार्य करने वाले, सत्य धर्म प्रकाशन के माध्यम से एक बृहद एवं अकर्षक दर्लभ पुस्तकों का प्रकाशन आपने खड़ा किया और उसे आर्य सम्मेलनों में जाकर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी की तरह बैठकर बेचना प्रारम्भ किया कार्य बढ़ा गाड़ी बना ली आने–जाने में सुविधा हो गई और वहाँ भी दुकान सजाने में कुछ सरलता हो गई एक विद्वान ब्रह्मचारी वेद प्रचार इस प्रकार भी कर सकता है यह एक नया आयाम आपने स्थापित किया। प्रकाशन आर्य समाज में अनेक हैं पर इनका तरीका अपने ढंग का पृथक् ही था गुरुकुलों के आचार्य तथा विद्वान सन्यासी आपको समझाया करते कि आप अपने स्वस्थ्य पर ध्यान दिया करें अपका स्वभाव था कि जितना भी धन हो सारा प्रकाशनार्थ में व्यय किया जाना था अपने लिए कुछ भी न रखना केवल वैदिक प्रचार करना ही आपका उद्देश्य था क्योंकि ये अपने सुख सुविधा का ध्यान न करके प्रकाशन बढ़ाने में ही चिन्तन मनन तथा क्रियान्वयन करते थे। एक दिन अचानक गुरूकुल पूठ आ गए ऊपर नीचे चढ़ने में परेशानी हुई तो बोले भाई सोचकर आया था कि यहाँ गंगा किनारे रहकर साधना भी कर लूँगा और बुढ़ापा भी यहीं पर बिता लूँगा। पर यहाँ तो अन्धेंर में हड्डी टूट गई तो बड़ी परेशानी हो सकती है मैंने कहा कि पिछले २० वर्षों में तो किसी की हड्डी टूटी नहीं आप इतने कमजोर हैं क्या? बोले अच्छा तो विचार करूँगा। फिर दिल्ली में रोहिणी में कोई आश्रम ले लिया वहाँ भी पूरा समय नहीं रह पाये गुरूकुल लाढौत में आचार्य हरिदत्त जी की प्रार्थना स्वीकार कर ली वही से जाते रहे। गुरूकुल झज्जर की शताब्दी पर मिले थे मेरे से कुछ आत्मीय भाव रखते थे एक दिन बोले जो भी पुस्तकें आपको पसन्द आयें ले जाओ मैंने कहा स्वामी जी एक भी पुस्तक नापसन्द नहीं है पर ले जाने की समस्या है कैसे ले जाऊँ? गाड़ी में जाओ लेकिन मैं व्यस्तता के कारण उनके साहित्यों को अपने साथ ला पाया मुझे क्या किसी को भी इतनी जल्दी जाने का अनुमान नहीं था वे तो एकदम डॉ० धर्मवीर जी अजमेर वालों की तरह ही स्वप्न सा हो गया मुझे तो पढ़कर भी विश्वास नहीं हुआ, अच्छा किसी ने फोन भी नहीं किया, किया, होगा तो मुझे पता नहीं चला पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी प्रत्येक सूचना दे देते हैं इस बार वे भी मुझे उदासीन सन्त अनुभव हो रहे हैं। मुम्बई आर्य समाज सान्ताक्रुंज के कार्यक्रम में सम्भवतया २००४ ई० में उन्हें सम्मानित किया गया कि वैदिक साहित्य प्रकाशन को सुन्दर प्रकाशित कर रहे हैं पुस्तकों को देखकर खरीदने की इच्छा, खरीदकर पढ़ने की इच्छा पढ़कर सुरक्षित रखने की इच्छा, स्वयं हो जाती है ऐसा है साजसज्जा इतरकाम को भुक्त भोगी ही जान सकता है। मेरा कुछ वर्षों से अनुभव है यह कार्य बहुत कठिन है। ऐसे कठिनक कार्य को सरलता से सफल करना भी सत्यानन्द नैष्ठिक जैसे तपस्वी–पुरूषार्थी–निर्लोभी ब्रह्मचारी द्वारा ही सम्भव है मुझे उनके अचानक जाने का हार्दिक कष्ट है। अभी प्रकाशन को विस्तार की आवश्यकता थी, पता नहीं उसकी ऐसी सूचना प्राप्त होगी। गुरूकुल झज्जर को शताब्दी पर गुरुकुल के स्नातकों में नैष्ठिक जी सम्मानित व्यक्तित्व रहे हैं। गुरूकुल झज्जर में उनका अन्तिम संस्कार इसका पुष्ट प्रमाण है कि आर्य समाज की शिरोमणित संस्था, गुरूकुल झज्जर एक आधार स्तम्भ है। ''सत्यधर्म प्रकाशन'' उनका एकमात्र पुरूषार्थ है उन्हें जीवित रखने के लिए प्रकाशन का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए। उनकी तरह समर्पित कार्यकर्ता उसके प्रचार–प्रसार में प्रकाशन को चलायें ऐसा प्रयास गुरूकुल अधिकारियों का होगा ऐसी अपेक्षा है। मुरादाबाद के प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में गतवर्ष रहे थे और उन्हें सम्मानित भी किया गया था। मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं गुरूकुल पूठ परिवार की ओर से हर्दिक श्रद्धांज्जली अर्पित करता हूँ।

संचालक– गुरूकुल पूठ–हापुड़
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
मो० : ९८३७४०२१६२

सावधान! विश्वभर के सुप्रसिद्ध डॉक्टरों व वैज्ञानिकों की चेतावनी

न सर्दी, न गर्मी, न सण्डे, न मण्डे, कभी न खाना अण्डे

विश्वभर के प्रसिद्ध डॉक्टरों व वैज्ञानिकों ने हाल ही में अण्डों पर विभिन्न प्रकार के परीक्षण एवं अन्वेषण किए हैं। इन्हीं तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि अण्डे व मांसाहार मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी न होकर हानिकारक होते हैं। उन्होंने शकाहार को मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम बताया तथा माँसाहार व अण्डों से उत्पन्न होने वाले रोगों की जानकारी दी। अण्डों के बह्य कवच में १५००० से ३०००० के लगभग सूक्ष्म छिद्र होते हें, जिनमें अनेक प्रकार के रोगाणु प्रवेश कर जाते हैं। जो सालमोनेला इन्फैक्शन तथा डी.डी.टी. के अंशों के रूप में सामने आते हैं। इसके अतिरिक्त अण्डों में कुछ भयंकर विजातीय तत्व जैसे–कोलेस्ट्रोल, एवीडिन, लाइप्रोटीन्स, सैच्युरेटिड फैटी एसिड, माइक्रोग्लोब्यूनिस, एस. आर. फैक्शन भी पाए जाते हैं। जिनके कारण हार्ट अटैक, हाई ब्लड–प्रेशर, जोड़ों का दर्द, स्ट्रोक पित्ताशय व मूत्राशय में पथरी, खुजली–दाद, एग्जिमा, लकवा, चर्म रोग, दमा, श्वेत कोढ़ बवासीर, गुर्दे खराब होना, अल्सर तथा पीलिया आदि सैकड़ों भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं।

प्रामाणिकता हेतु स्पष्टीकरण–

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS) के पोषण विभाग के अध्यक्ष डा० महेशचन्द्र गुप्त के अनुसार– ''अण्डा न ही खाया जाए तो अच्छा है– क्योंकि हर दस में से नौ अण्डों में कैंसर पैदा करने वाले डी.डी.टी. के अंश पाए जाते हैं। अण्डों में डी.डी.टी. नामक विषैला पदार्थ रोग जनक होता है जो मनुष्य की नसों को जर–जर कर देता है। कैंसर जैसे असाध्य रोग को व्यर्थ में ही अण्डे खाकर नियंत्रण देना कोई बुद्धिमत्ता की बात नहीं।

१९५४ में मैडिसिन में २,२५००० डालर (२७ लाख रुपए) के नोबेल प्राईज विजेता, हार्ट स्पैशलिस्ट– अमरीकी डा० माइकल एस. ब्राउन व डा० जोसेफ एल. गोल्डस्टीन ने अपनी १० वर्षों की खोजों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि अण्डे के पीले भाग में 'कोलेस्ट्राल' नामक विषैला तत्व बहुत अधिक मात्रा में पाया गया है जिस कारण अण्डे खाने से हार्ट अटैक, हाई ब्लड प्रेशर, जोड़ों में दर्द, चर्म रोग, स्ट्रोक, पित्ताशय व मूत्राशय में पथरी आदि अनेक रोग पैदा होते हैं।

इंग्लिश डॉ० राबर्ट ग्रास ने सिद्ध किया कि अण्डे की सफेदी में 'एवीडिन' नामक विषैला तत्व पाया गया है जिस कारण अण्डे खाने से खुजली, दाद, एग्जिमा, लकवा, चर्मरोग, चमड़ी का कैंसर, दमा, श्वेत कोढ़ आदि आदि रोग पैदा होते हैं।

ब्रिटिश हैल्थमिनिस्टर– मिसेज एडविना क्यूरी ने चेतावनी दी है कि मुर्गियों की आँतों में व अण्डों के पीले भाग में 'सालमोनेला' नामक छूतरोग के कीटाणु पाए गए हैं जिनके कारण अण्डे या मुर्गी का मांस खाने से उल्टी, दस्त, टायफाईड, फीवर व आंतों में सूजन जैसे भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं और कभी–कभी तो मौत तक भी हो जाती है।

डॉ. ई.वी. मैक्काफलम (ग्रेट मेडिकल अथोरिटी) ने सिद्ध किया है कि अण्डों में तुरन्त शक्ति देने वाले तत्व– कार्बोहाईड्रेस व विटामिन 'सी' बिलकुल भी नहीं पाए गए हैं, इस कारण अण्डों से पेट में सड़न पैदा होती है।

डा० पी०सी० सैन– स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार लिखते हैं– चूंकि अण्डे, मछली, मांस में भोजन तन्तु **(Dietary Fibres)** बिलकुल नहीं होते इस कारण इनके सेवन से कब्ज, आंतों में कैंसर, बवासीर, गुर्दे खराब, अल्सर आदि रोग पैदा होते हैं।

बम्बई की हॉफकिन्स इन्स्टीट्यूट ने चेतावनी दी है कि बच्चों को भूल कर भी अण्डे मत दो, क्योंकि अण्डों से बच्चों में जुकाम खांसी, नजला, दमा, गला खराब, पथरी, एलर्जी आंतों में मवाद, हार्ट अटैक , हाई ब्लड प्रेशर, हाजमा खराब पाचन शक्ति बर्बाद, शारीरिक शक्ति व स्मरण शक्ति कमजोर, पीलिया आदि सैकड़ों भयंकर रोग पैदा होते हैं, क्योंकि नई मेडिकल खोजों के अनुसार बच्चों का हाजमा बहुत कमजोर होता है और अण्डे पचने में बहुत भारी होते हैं।

भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'हेल्थ बुलेटिन न० २३' द्वारा यह सिद्ध किया गया कि १०० ग्राम अर्थात २ अण्डों में १३.३ ग्राम प्रोटीन पाया गया है। इस प्रकार इसके मुकाबले में १०० ग्राम मूंगफली में ३१.५ ग्राम प्रोटीन १०० ग्राम प्रोटीन मैथी में २६.२ ग्राम प्रोटीन तथा १०० ग्राम सोयाबीन में ४३.२ ग्राम प्रोटीन में पाया जाता है। इस प्रकार अण्डों की अपेक्षा सैकड़ों शाकाहारी खाद्य पदार्थों में प्रोटीन आदि पौष्टिक तत्व भी अधिक मात्रा में पाए गए हैं तथा अण्डे तो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं।

निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है

— विवेक प्रिय आर्य

हम अपने बनाए मंदिरों को साफ–सुथरा रखते हैं, उनमें धूप–दीप जलाते हैं, उन्हें सुगंधित रखते हैं। लेकिन कैसा आश्चर्य है कि ईश्वर की बनायी ''अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पुरयोध्या'' अर्थात् आठ चक्र और नौ दरवाजों वाली अयोध्या नगरी में यानी अपने शरीर रूपी मानव मंदिर में हम शराब, मांस, अण्डे, बीड़ी, सिगरेट का धुआं सब कुछ डालते हैं। जीवन कला के अभ्यासी को आहार शुद्धि और सात्विक हो, उसमें कर्मचारियों का रक्त नहीं सना हो।

सामान्यता समझा जाता है कि योग का अर्थ अग्नि या सूर्य के समक्ष महीनों वर्षों तपना नहीं होता। क्योंकि यदि तपना ही होता तो मोक्ष का अधिकारी पतंगा होता है, जो दीपक पर अपने को स्वाहा कर देता है। न जल में वर्षों खड़े होने पर मोक्ष मिलता है, क्योंकि बगुला घण्टों पानी में ध्यान मग्न खड़ा रहता है और मछली तो जल में ही उत्पन्न होती है तथा जीवन पर्यंत जल में रहकर अंत में जल में समाधि लेती है। इसी प्रकार ठंडेश्वरी या मौनी बाबा का क्षणिक नाटक है। प्रदर्शन मान–प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा कुछ कमाने का चोखा धंधा है। योग का वास्तविक अर्थ है कि अपने वर्णाश्रम के अनुसार निष्काम भाव से कर्मरत रहना, वासनाओं की अग्नि में इंद्रियों को तपकार निर्विषय कर देना और जीवन संग्राम के समस्त दुःखों को प्रभु प्रसाद समझकर उनसे संपूर्ण पुरूषार्थ के साथ विशांक रूप में जूझते रहना। प्रायः समझा जाता है कि ''लोकोयं कर्म बंधनः'' अर्थात कर्म लोक बंधन का कारण है। लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन का कारण है। लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन मुक्ति का साधन है। अब प्रश्न है कि कौन सा कर्म है जो योग बन गया है, यज्ञ बन गया है। कर्म में यह कौशल कि वह यज्ञ बन जाये, यही योग है और यही जीवन कला है। भगवान श्रीकृष्ण कहते है ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अर्थात् कर्म में कोशल उसे यज्ञमय में बना देता है, प्रभु से वियोग नहीं योग कराता है अथवा मिलाता है। इस प्रकार ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म का रूप लेते हैं तो वही उपासना बन जाते हैं।

ज्ञान, कर्म और उपासना का यह त्रिवेणी संगम मानव का मोक्ष तीर्थ बन जाता है। कानों से हम भद्र सुनें, आंखों से अभद्र देखें, धरती को मधुरता से सीचनें के लिए शहद जैसा मीठा और हितकारी भद्र वचन कहें। मस्तिष्क से भद्र चिंतन, हाथों से भद्र कर्म और पांवों से भद्र चलन करें तब होगा हमारा आत्म यज्ञ। इसी को वेद माता ने इसे षड् योग भी कहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसे समत्व योग कहा है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! संसार क सारे दुःख संग के कारण हैं। योग और कुछ नहीं है कर्म करते हुए सिद्धि–असिद्धि में समभाव बनाए रखना, परमात्मा के साथ युक्त रहना, अपने को उसी के हथों से देना ही योग है। वहीं हमारे भीतर के शत्रु काम, क्रोध, लालच, लालसा, झूठ, बेईमानी, दुराचार आदि हैं। मनुष्य कितने ही आविष्कार क्यों न कर ले, कितना ही बड़ा साम्राज्य क्यों न खड़ा कर ले लेकिन जब तक उसके भीतर ये शत्रु बैठे हैं तक तक बाहर की जीत, जीत नहीं हार है। क्योंकि जितना ही वह लालच और लालसा, झूठ और बेईमानी से बाहर का सामान जुटाता जाएगा उतना ही उसका लालच, उसकी लालसा, उसकी बेईमानी, उसकी दूसरों का खून पीने की प्यास बढ़ती जायेगी। जीत तो तभी होगी जब जिस प्यास को बुझानें तुम निकले हो, वह प्यास बुझ जाएगी। क्या सिकन्दर की प्यास बुझी? क्या नेपोलियन की प्यास बुझी? क्या हिटलर और मुसोलिनी की प्यास बुझी? यह सब अपनी लालसा की प्यास में ही डूब गये। प्रश्न है कि क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे मनुष्य भीतर के इन शत्रुओं से जीता जा सके। इसका उत्तर भारत की संस्कृति के पास है। वह है योग दर्शन के रचयिता पतंजलि मुनि के पांच यम। अपने तथा मानव समाज के जीवन के भवन को वैदिक संस्कृति के उन पांच आधार स्तंभों पर खड़ा कर देना, जिनकी नींव पाताल तक तथा चोटी हिमालय के शिखर तक चली गई, यह पांच यम हैं — अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हीं को योग भी कहा गया है। योग का अर्थ अपने को संपूर्ण रूप से मानव–देव–ऋषि बनाना है और इसका साधन प्रभु के मंदिर मानव शरीर की एक–एक इंद्रिय को उपयोगी बनाना है।

मो० : ०६७१६६१०५५७

नारियों के अधिकार व कर्तव्य

— आचार्य नन्दिता जी शास्त्री

यत ते नाम सुहवं सुप्रणीतेनुमते अनुमतं सुदानु।
तेना नो यज्ञं पिपहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।

इस मंत्र में पत्नी को अनुमति शब्द से सम्बोधित किया है। अनुमति से अच्छा नाम शायद सुमित हो सकता है परविश्वारा है। यह सत्य है नारी जहां जिस भी क्षेत्र में होगी वहां दुःख, कष्ट, घरेलु छोटी–बड़ी समस्याएं तो रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक संबोधन अभी और शेष है मन्त में कहा सुभगे! सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि तू सुवीरं रविं' अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिये धेहि– धारण कर, और उसका पोषण भी कर क्योंकि उत्तम सन्तान देकर अच्छो पालन पोषण के कर सुसन्ता प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्तवय का बोध अच्दी प्रकार करती थी, वह धर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा सन्तान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्य को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती थी।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

—अथर्व ६/३६/४

इस घर के अहं वदामि — मैं बोलती हूं, मैं बोलूगी, नेत्! त्वं —तू नहीं। कभी नहीं हाँ सभा में बाहर सोसायटी में तू बोल तुझे जितना बालना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहते हैं— तू बाहर जा रहा है जा! कीर्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है, उसे होना भी चाहिये पर पुरुष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरूष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र मे नारी को सुभंगा शब्द से सम्बोधित किया है और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। इसीलिए पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य विवाहिता के जो चिन्ह है बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था।

इस प्रकार नारी के लिए पत्नी के लिए प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्वारा है। यह सत्य है नारी जहां जिस भी क्षेत्र में होगी वहां दुःख कष्ट, घरेलु छोटी, बड़ी समस्याएं तो रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक संबोधन अभ और शेष है मन्त्र में कहा सुभगे! सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि सुवीरं रविं— अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिए धेहि—धारण कर, और उसका पोषण भी कर क्योंकि उत्तम सन्तान देकर अच्छो पालन पोषण के द्वारा सुसन्तान प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्तव्य का बोध अच्छी प्रकार करती थी, वह घर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा संतान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्व को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती है—

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

अथर्व ६/३६/४

इस घर अहं वदामि — मैं बोलती हूं, मैं बोलूंगी, नेत् त्वं — तू नहीं। कभी नहीं। हां सभा में बाहर सोसायटी में तू बोल तुझे जितना बोलना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहते हैं— तू बाहर जा रहा है जा। लेकिन ध्यान रखना तू केवल मेरा ही है। बाहर किसी और की पराई स्त्री का कीर्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है, उसे होना भी चाहिये पर पुरूष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरूष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र में नारी को सुभंगा शब्द से सम्बोधित किया है और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। इसीलिये पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य विवाहिता के जो चिन्ह हैं बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रृंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था।

इस प्रकार नारी के लिए पत्नी के लिये प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्ववारा और सुभगा ये विशेषण वेदों में नारी कर्तव्य व अधिकार के व्यापक हैं। यज्ञ को पूर्ण करना व उसका पालन करने का दायित्व नारी पर है। यदि पुरुष समाज अपने अतिरिक्त बल के प्रयोग से इस वेदाज्ञा का उल्लंघन कर नारी के अधिकारों पर प्रहार करेगा तो समाज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के साथ दुर्भिक्ष अकालमृत्यु और भय से युक्त दुर्दिन ही उसका परिणाम होगा। यह सुनिश्चित हैं क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूजा व्यक्तिक्रमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

जलियावाला बाग हत्याकाण्ड सोचा समझा नर–संहार था

– अर्जुनदवे चढ्डा

सोना उगलती धरती के अभिनन्दन का पर्व बैशाखी, उमड़ते उल्लास की अगवानी की बजाय कैसे सामुहिक नरसंहार बन गया और आजादी के इतिहास में रक्तरंजित अध्याय के रूप में दर्ज हुआ? इसे लेकर आज भी अनेक प्रश्न अनुत्तरित हैं। किन्तु इसका बड़ा सच ब्रिटिश हुक्मरानों द्वारा हिन्दू–मुस्लिम भाईचारे की भावना पर आघात पहुंचाने की मंशा से जुड़ा था। आजादी के आंदोलन के दौरान जब हिन्दू–मुस्लिम समुदायों के आपसी सद्भाव को खत्म करने के अंग्रेजों के प्रयास जारी थे, उसी दौरान अमृतसर में मुस्लिम नेता डां० किचलू और हिन्दू नेता डां० सत्यपाल ने अंग्रेजों की श्फूट डालो राज करो की नीति में झुठलाने का बीड़ा उठाया था। नतीजन अंग्रेजों ने दोनों नेताओं को अमृतसर छोड़ने के आदेश दिये थे। इन्हीं के निष्कासन के विरोध में अमृतसर में जो घटनाक्रम चला उसकी परिणती कुछ दिनों बाद एन बैशाखी के दिन जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के रूप में हुई।

इतिहास को टटोलें तो कई बातें सामने आती है। असल में जलियांवाला बाग कोई बाग नहीं होकर चौतरफा मकानों से घिरा एक जमीन का टुकड़ा था। जिसपर एक कुंआ, एक समाधि और तीन दरख्त थे। इस क्षेत्र से मकानों की कतार के बीच में बाहर निकलने वाली गलियां इतनी तंग थी बमुश्किल कोई निकल सकता था। अलबत्ता ठीक से आवाजाही का एक ही रास्ता था। उन दिनों रोलेट एक्ट को लेकर देश का माहौल बेहद गर्म था। लगभग २७ हजार वर्ग मीटर क्षेत्रफल वाले आग में १३ अप्रैल १६१६ के दिन अच्छी खासी हलचल बैसाखी के त्यौहार को लेकर थी। बच्चे, बूढ़े, जवान और में भारी तादात में वहां बैसाखी के मौजे–मेले में व्यस्त थे। लेकिन चूंकि हालात राजनीतिक गरमा–गरमी के थे। इसीलिए सभा जैसा नजारा भी वहां था और भाषण देने वाले भी एक के बाद एक बोल रहे थे। किन्तु लोगों का ध्यान पूरी तरह इन भाषणों की तरफ होने के बजाय बैसाखी के मनोरंजक कार्यक्रमों की ओर था। वस्तुतरू कुल मिलाकर स्थिति यह थी कि सभा सरीखा जमावड़ा डां. किचलू और डां० सत्यपाल के निष्कासन के विरोध में था। जिस समय लोग ध्यानमग्न होकर वक्ताओं को सुन रहे थे, शाम के पांच बज चुके थे। तभी अचानक फौजी बूटों की आवाज सुनाई दी और बाग के एक सिरे पर बने संकरे रास्ते में अंग्रेज अफसर बिग्रेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर की अगुवाई में दो कतारों में चलती फौजी टुकड़ी प्रवेशद्वार के एक तरफ दीवार के सहारे फैल गई और जनरल चिल्लाया फायर। इस फरमान के साथ ही नरसंहार का यह भयानक सिलसिला लगभग १० मिनट तक चलता रहा तथा जब सिपाहियों का गोला बारूद पूरी तरह खत्म हो गया जब कहीं जाकर यह संहार थमा। कुल मिलाकर १६५० राउण्ड गोलियां चलीं। गोलियां अलग–अलग चल रही थी। बहुत से लोग मारे गये। गोलियां चलना बंद होते ही डायर अपने सैनिकों को लेकर शहर से बाहर रामबाग चला गया। पहले यह समझा गया कि लगभग २०० लोग मारे गये। उस समय तक यही संख्या घोषित की गई थी। बाद में इलाहाबाद की सेवा समिति की मदद से एक सूची बनी, जिससे ज्ञात हुआ कि ३७२ लोग मारे गये। इनमें लगभग ८७ लोग शहर के बाहर के गांवों से आए हुये थे। घायलों की संख्या मृतकों से तिगुनी थी। लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों को कहना है कि मारे गए लागों की संख्या एक हजार से ज्यादा थी। गोलियों से तथा भगदड़ से लगभग २००० सिक्ख, हिन्दू और मुस्लिम घायल अवस्था में मर रहे थे अथवा मर चुके थे। जनरल डायर ने तुरंत आदेश जारी कर दिया कि रात के आठ बजे बाद जो घर से बाहर देखा जाएगा उसे गोली मार दी जायेगी। उसने घायलों के लिये डॉक्टरी मदद का इंतजाम न खुद किया और ना ही किसी को करने दिया।

घटना के दिन २४ अप्रैल को हालात शांत रहने के बावजूद १५ अप्रैल को अमृतसर में मार्शल लॉय लागू हो गया। इसके बाद एक लम्बे समय तक पंजाब अंग्रेजों के जुल्म से जूझता रहा।

कुछ इतिहासकार जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड को अंग्रेजों को सोचा समझा षड्यंत्र मानते हैं। उनका कहना है कि नरसंहार की भूमिका तो एक दिन पहले १२ अप्रैल को ही बन गई थी। इस दिन धाबा खटीकन में हंसराज नामक एक व्यक्ति से सभा बुलाकर अगले दिन यानि १३ अप्रैल को जलियांवाला बाग में सभा करने की योजना को मूर्ति रूप दिलवा दिया उस पर संदेह की उंगलियां तब उठी जब इस मामले की न्यायिक जांच हुई तो यही हंसराज सरकारी गवाह बन गया। उस की पूरी भूमिका प्रश्नवाचक चिन्ह उत्पन्न करती है कि क्या वह पुलिस एजेंट था? क्या उसके जलिये ही ब्रिटिश शासकों ने जघन्य हत्याकाण्ड का षड्यंत्र रचा? हलांकि तथ्यों के अभाव में यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। किन्तु स्थितियों का ग्वेषणापरक अनुशीलन किया जाए तो बात समझ में आ जाती है कि जनरल डायर इतना निर्मम क्यो हो गया था कि, उसने वहां मौजूद लोगों को चुन–चुन कर मारने के आदेश दिए जब तक फायरिंग का पूरा गोला–बारूद खत्म नहीं हो गया। एक इतिहासकार का तो स्पष्ट तर्क है कि हंसराज के माध्यम से सभा के नाम पर उस क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा लोगों को एकत्रित किया गया, जहां पहले से बैसाखी मनाने लोगों की भीड़ एकत्रित होनी थी। अंग्रेज जानते थे कि जहां वहां एकाएक गोलीबारी की जाएगी तो भगदड़ में संकरी गलियों में लोग फंसकर रह जायेगें और उनका निकलना मुश्किल हो जाएगा। चौड़े रास्ते पर तो पहले ही फौजियों ने कब्जा कर रखा था।

इस हत्या काण्ड की जांच के लिए गठित हंटर समिति को दिए गए जनरल डायर के बयान की विभिशिका को समझें तो उसने साफ कहा था कि सभा पर गोली चलाने का उसका उद्देश्य अमृतसर में आतंक पैदा करना था इसलिए उसने बिखतरी सभा के बीच भागते लोगों पर गोलियां चलाना जारी रखा। उसको मलाल था कि रास्ता संकरा होने के कारण वो बख्तरबंद गाड़ियां अंदर नहीं जे जा पाया, अन्यथा उसका इरादा तो सभी को समाप्त कर देने का था। अमृतसर आग के तवे की तरह तो ६ अप्रैल को ही तपने लगा था। उस दिन रामनवमी थी और हिन्दू–मुसलमानों ने मिलकर जुलूस निकाला था।

इसी दिन डॉ० किचलू और डॉ० सत्यपाल को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी से पूरा अमृतसर सुलग उठा। इसके विरोध में जुलूस निकला तो अंग्रेज शासकों ने उस पर धुंआधार गोलियां बरसाई। नतीजन एक दर्जन लोग शहीद हो गए। बिगड़ते हालात के मद्देनजर अमृतसर का शासन जनरल डायर के नेतृत्व में सेना को सौंप दिया गया। सैनिक शासन ने जुलूसों और सभाओं पर प्रतिबंध तो लगा दिया किन्तु इसका प्रचार–प्रसार नहीं किया। जबकि १३ अप्रैल को बैशाखी के मौके पर आमसभा की रहस्यमय घोषणा को ज्यादा हवा दी। ऐसे में प्रतिबंध की जानकारी किसको होनी थी? आखिर इस सवाल को भी आज तक क्यों नहीं टटोला गया कि इस क्षेत्र में सभा और मेले में जुटे लोगों की संख्या इस हजार से ज्यादा हो गई तभी जनरल डायर वहां क्यों पहुंचा? डायर की निमर्मता की इससे बड़ी मिसाल क्या होगी कि उसने इस गोलीबारी में ४२ बच्चों को भी भून डाला, जिसमें एक बच्चे की आयु तो सिर्फ सात महीने की थी।

शासन तन्त्र की समझ रखने वालों का कहना है कि जब भी शांतिभंग का अंदेशा होता है तो सुरक्षा बल पहले भीड़ को तितर–बितर होने का संदेश देते हैं। फिर भी लोग नहीं हटते तो उन्हें खदेड़ने के लिए हवाई फायर किए जाते हैं। लेकिन जनरल डायर ने तो यह जानने की कोशिश भी उस वक्त नहीं की कि क्या वहां चल रहे भाषणों से शांतिभंग का खतरा उत्पन्न हो रहा था? तथा भीड़ को चेतावनी दिए बिना ही उसने गोलियां चलाने का आदेश दे दिया। फिर आखिर ऐसा कौन सा फसाद हो गया था कि वहां लोगों पर दस मिनट तक अंधाधुंध गोलियां चलती रहीं? बैसाखी पर लिखे गए नरसंहार के काले अध्याय को लेकर हजारों प्रश्न अनुत्तरित हैं। हलांकि जनरल डायर को उसके किए की सजा भी मिली। किन्तु इस क्रूर अध्याय की अंतर्कथा बैसाखी के उल्लास को सजल किए बिना नहीं रहती।

सत्वगुण से शरीर, मन व मस्तिष्क स्वस्थ

–डॉ० अशोक आर्य

मानवीय शरीर में सत्वगुण का विशेष महत्व होता है। यह सत्वगुण ही है जिससे मानवीय शरीर, मानवीय, मन तथा मानवीय मस्तिष्क आदि सब कुछ स्वस्थ रहता है। इस लिए मानवीय शरीर के लिए सत्वगुण एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक तत्व है। इस बात की और संकेत करते हुए ऋग्वेद अध्याय एक सूक्त ५२ का मन्त्र संख्या १२ इस प्रकार उपदेश कर रहा है –

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः सवभूत्योजा अवसे धिषन्मनः।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम्।। ऋग्वेद १.५२.१२

1. हम धिषन्मनःहों – मन्त्र कहता है कि जब मानव की इन्द्रियाँ मानवीय शरीर को पालन करने की दृष्टि मात्र से ही विषयों को ग्रहण करने वाली बन जाती हैं तो मानव ''धिषन्मनः'' बन जाता है।

2. हम आत्मिक एश्वर्य (ओज) को धारण करें– मानव की इन्द्रियाँ शरीर को पालन की दृष्टि से विषयों को ग्रहण करने लगती है अथवा जब हम अपनी वासनाओं का धार्षण करने वाले मन के स्वामी हो जाते हैं या यूँ कहें कि हम अपने मन को ऐसा बना लेते हैं कि हमारा मन वासनाओं का गुलाम न बन कर उससे ऊपर उठ जाता है तथा वासनाएं उस का दास बन जाती हैं। उस समय हम स्वभूत्योजा बन जाते हैं अर्थात् हम आत्मिक एश्वर्य को धारण करते हैं आत्मिक धन के स्वामी बन जाते हैं। इस प्रकार हम ओज को धारण करते हैं।

ओज को धारण करने वाले बनकर हम रजोगुण से, उस रजोगुण से ऊपर उठते हैं, जो विषयों की रूचिवाला होता है अर्थात् हम विषय विकारों से ऊपर उठ जाते हैं। इस प्रकार सब तरह के विकारों से ऊपर उठकर हम सत्वगुण में स्थापित होते हैं अर्थात सत्वगुण के सवामी होते हैं, सत्वगुण में अवस्थित होते हैं। इसलिए ही मन्त्र में धिषन्मनः का प्रयोग हुआ है।

3. काम, क्रोध के धर्शक बनें– यह धिषन्मनः क्या है? इस से अभिप्रायः है कि हम काम, क्रोध आदि बुराइयों के धर्शक बन जाते हैं अर्थात् इन बुराइयों को हम धारण नहीं करते। इन बुराइयों से हम ऊँचे उठ जाते हैं। हम काम, क्रोध के धर्शक मन वाले जीव बन जाते हैं।

4. आत्मिक उन्नति– इस से ही हम स्वभुती–ओजाः बन जाते हैं अर्थात् हम में आत्मिक उन्नति की शक्ति का प्रवाह होता है। हम आत्मिक उन्नति के प्रशस्त मार्ग पर चलने वाले बन जाते हैं। आत्मिक उन्नति रूपी धन के हम स्वामी बन जाते हैं। इस प्रकार आत्मिक उन्नति के कारण हम ओज से भर जाते हैं। आत्मिक उन्नति रूपी ओज जो है उस धन के हम अधिकारी हो जाते हैं। इस प्रकार की ओजस्विता वाला मानव त्वमस्य रजसो व्योमनः पारे अर्थात् तूं इस रजोगुण से युक्त, रजोगुण से भरपूर आकाश से पार हो जाता है। अब रजोगुण का तेरे लिए कुछ भी महत्व नहीं होता। विषय वासनाओं का तेरे लिए कुछ भी महत्व नहीं होता। विषय वासनाओं का तेरे लिए लिए कुछ भी महत्व नहीं होता। इस सब को त्याग कर, इस सब से ऊपर उठकर तूं सत्वगुण में अवस्थित हो जाता है। सत्वगुण ही अब तेरे लिए धन बन जाता है।

5. सबल शरीर– हे मानव! इस प्रकार सत्वगुण रूपी धन एश्वर्य का स्वामी बन कर तूं भूमिम इस निवास स्थान रूपी शरीर को, उस शरीर को जो तेरा घर है, तेरा निवास है (वह स्थान जिसमें मनुष्य निवास करता है) को ओजसः प्रतिमानं चकृषे अर्थात् बल का बलवान बना लेता है। इस प्रकार शरीर को सबल बनाता है सबल शरीर से ही सब कार्य संभव होते हैं। यदि शरी बलवान नहीं है तो इसे सदा रोग–शौक आदि घेरे रहते हैं। इसलिए शरीर का सबल होना आवश्यक होता है तथा इस मन्त्र के अनुसार जब विषय वासनाओं से ऊपर उठ जाते हैं तो शरीर स्वयमेव ही ओज से सबल बन जाता है। बल का प्रतिनिधित्व करने लगता है।

6. ज्ञान का प्रकाश – शरीर सबल होने पर अपः, स्वः, दिवं, परिभूः हो आता है अर्थात् जब शरीर सबल होता है तो तूं इसके कारण अपने ह्दय रूपी अंतरिक्ष को प्रकाशमय करता है। हम जानते हैं कि प्रकाश को खाली स्थान की आवश्यकता होती है। जहां खाली स्थान अर्थात् आकाश होता है, वहां ही प्रकाश होता है जिससे हम प्रकाशित होते है तब हम कुछ देख पाते हैं। इस प्रकार ही हमारे ह्दय को भी आकाश माना जाता है। इस आकाश रूपी ह्दय में जब ज्ञान का प्रकाश होता है तब ही हम बुद्धियों के स्वामी बनते हैं। अतः अपने ह्दय में बुद्धि रूपी, ज्ञान रूपी प्रतिमा को स्थापित करने के लिए हमारे पास ओज का एश्वर्य होता है तब ही हमारे ह्दय में ज्ञान रूपी प्रतिमा स्थापित होती है, ज्ञान का प्रकाश होता है। इस प्रकार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हुए हमारा मस्तिष्क रूपी दुलोक चारों और से अर्थात् सब और से कुछ न कुछ ग्रहण करने वाला, प्राप्त करने वाला होता है। इस प्रकार से सब ओर से ग्रहण करने के योग्य होता हुआ यह मस्तिष्क सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान को, सब प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करता हुआ प्रभु के समीप जाता है। उस पिता की निकटता को पा लेता है।

7. सत्वगुण– सत्वगुण को अपना निवास बनाने वाले, इसे अपने ह्दय में बसाने वाले लोगों को तीन प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं। यथा :

1. शरीर सबल– हमारा शरीर स्वस्थ बन जाता है। इसमें सब प्रकार के बल निवास करने लगते हैं। इस प्रकार यह शरीर बन जाता है।

ख) प्रकाशमान् शरीर– सत्वगुण की शक्ति से युक्त शरीर ह्दय की वासनाओं रूपी मल से रहित हो जाता है। वासना– रहित यह शरीर प्रकाशमान् हो जाता है। इस में सब और से ज्ञान रूपी प्रकाश प्रवेश करता है। तथा

ग) इस प्रकार के शरीर में अवस्थित मस्तिष्क सब प्रकार के ज्ञान– विज्ञान रूपी ज्योति से जगमगाने लगता है तथा इस का यश और कीर्ति दूर–दूर तक चली जाती है।

हँसना जरूरी है

किसी दार्शनिक ने कहा है कि – 'जब हम हँस रहे होते हैं तो यह समझना चाहिये कि उस समय हम ईश्वर की पूजा कर रहे है।

जी हाँ! यह सच है कि हँसना–मुस्कुराना ईश्वर की पूजा करने के समान ही क्योंकि इस दुनिया में केवल मनुष्य को ही यह क्षमता प्राप्त है कि वह हँस सके और मुस्कुरा सके। यो तो इस पृथ्वी पर रहने वाले अन्य जीव जन्तु और पशु–पक्षी आदि भी आदि भी किसी अवसर विशेष पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और विभिन्न तरीकों (जैसे–उछल–कूद कर, दौड़कर, छलांगें मारकर आदि) के माध्यम से उस प्रसन्नता को प्रकट भी करते हैं। लेकिन यह वरदान केवल मनुष्य को ही प्राप्त हो सका है कि –वह प्रसन्नता प्रकट करने के लिए हँस सके और मुस्कुरा सके। एक घटना प्रस्तुत है।

एक बार एक व्यक्ति बहुत अधिक बीमार पड़ गया था। डॉक्टरों ने उसके लिए कह दिया था कि अब वह कभी भी ठीक नहीं हो सकता है। जब उस व्यक्ति को यह बात मालूम हुई तो उसने कहा कि– मैं अवश्य ही स्वस्थ होकर दिखाउंगा। उस व्यक्ति ने यह नियम बनाया कि–वह प्रतिदिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर पन्द्रह मिनट तक हंसा करेगा। उसने इस नियम का दृढ़ता से पालन किया और आप यकीन मानियें कि वह कुछ ही दिनों में पूर्णतः ठीक हो गया। रोगी के लिये बेशक दवाईयां जरूरी हैं लेकिन हंसना और प्रसन्न रहना उससे भी ज्यादा जरूरी है। वैसे भी, यदि मनुष्य प्रतिदिन हंसना रहे और प्रसन्न रहे– तो वह आसानी से बीमार ही नहीं पड़ेगा।

हलांकि यह भी आवश्यक है कि – हमारा हंसना– शिष्ट, समयानुकूल, विद्वेष–रहित, किसी व्यक्ति–विशेष के सम्मान को हानि पहुंचाने की भावना से रहित होना चाहिये। कुछ प्रहसंन के चुटकुले प्रस्तु हैं –

- एक बुढ़िया बस में चढ़ी और कन्डक्टर से बोली– बेटा! जब धौलपुर आ जाये तो बता देना। कन्डक्टर को याद न रही। जब बस धौलपुर से कोई दस किलोमीटर आगे निकल गई तब उसे ध्यान आया। उसने ड्राइवर से कहकर बस उल्टी मुड़वाई और वापस धौलपुर आया। फिर बुड़िया से बोला – 'माई! धौलपुर आ गया। तू उतर ले।' बुढ़िया बोली – बेटा! मुझे यहाँ पर उतरना थोड़े ही है। दरअसल मुझे खांसी हो गई है। मेरे डॉक्टर बेटे ने मुझे दवाई दी थी और कहा था कि जब बस धौलपुर पहुंचे तो एक खुराक ले लेना।'
- रामू (श्यामू से) – आज मैंने पुलिस को बेवकूफ बना दिया।' श्यामू (आश्चर्य से)– वो कैसे?' रामू (खुश होकर) 'पुलिस तो मुझे गोपाल समझकर पीट रही थी लेकिन मैं तो रामू था।'
- एक पुलिस इंस्पेक्टर ने अपने दोस्त से पूछा– 'बताओ तो भला, पुलिस के फोन का नम्बर १०० क्यों होता है?' दोस्त– 'वो इसलिये कि लोगों को यह आसानी से याद हो जाये और कोई वारदात होने पर वे तुरन्त पुलिस को फोन कर सकें।' इंस्पेक्टर– 'गलत।' दोस्त तो फिर?' इंस्पेक्टर – 'वो इसलिये कि हम पुलिसवाले सौ बार बुलाने पर भी वहाँ नहीं जाते हैं जहाँ पर कोई भी वारदात होती है।'
- एक ज्योतिषी थाने में जाकर बोला – 'थानेदार साहब! मेरा लड़का घर छोड़कर कहीं भाग गया है, उसकी खोजबीन कराइये!' थानेदार बोला– 'लेकिन पंडित जी! आप तो ज्योतिष के बल पर खोई हुई चीजों का पता लगाने का दावा करते हैं। अपने लड़के को भी पोथी–पत्रा देखकर क्यों नहीं ढूँढ़ लेते?' ज्योतिषी ने मुस्कुराकर कहा– 'बात यह है थानेदार साहब! मैं दक्षिणा लिये बगर अपनी

भूल सुधार

अंक १५ में भूलवश आर्य मित्र के पूर्व सम्पादक श्री वेदव्रत अवस्थी जी का नाम छप गया था लेकिन अब उसे सुधार कर लिया गया है। इसके सम्पादक, प्रकाश, मुद्रक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी हैं।

शोक सन्देश

आर्य समाज श्रंगार नगर लखनऊ की वयोवृद्ध सदस्यों पूज्य माता जी श्रीमती सरोज रहेजा जी १०६ निधन १६ मार्च २०१७ को हो गया माता सरोज रहेजा जी आर्य समाज के हर कार्यक्रमों में बड़ी श्रद्धा के भाग लेना और साप्ताहिक सत्संगों में हमेशा प्रथम उपस्थित होना उनके स्वाभाव में था आज माता जी स्थान सूना देखकर हम सभी सदस्यों की आंखें नम हो जाती है हम सभी सदस्यगण उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

राकेश माहना, मन्त्री आर्य समाज, श्रंगार नगर, लखनऊ

आचार्य राजदेव जी दिवंगत

गुरूकुल एरवा कटरा जि० औरैय्या (उ०प्र०) के प्राचार्य आचार्य राजदेव जी का देहावसना हो गया वे आर्य जगत् के वैदिक विद्वान थे आर्य समाजों में वेद प्रचार करने पूरे देश में जाते थे। उनके निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ कार्यालय में शोकसभा का आयोजन किया गया। सभा प्रधान श्री डॉ० धीरज सिंह ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए परिवार को धैर्य दिलाने की प्रार्थना की है। शोक सभा में सभा मंत्री के अलावा हरीश शास्त्री, कृष्ण मुरारी, भुवन पाठक, आशुतोष, अजय श्रीवास्तव, गम्भीर सिंह, आदि सभी कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ

संचालक– गुरूकुल पूठ हापुड़, मो० : ९८३७४०२१९२

शोक संदेश

आर्य समाज सीपरी बाजार–झांसी के वरिष्ठतम सभासद श्री निहाल चन्द्र बजाज का ८८ वर्ष की आयु में दिनांक १८ मार्च २०१७ को निधन हो गया। उनकी अन्तेष्टि पुरोहित आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी ने पहुज नदी के तट पर स्थिति मुक्तिधाम पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न कराई। दिनांक २० मार्च २०१७ को भी निहाल चन्द्र बजाज की पुण्य स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन पण्डित विवाह घर में सम्पन्न हुआ। उनकी अन्त्येष्टि तथा श्रद्धांजलि सभा में झांसी जनपद के अनेक आर्य पुरूषों और स्त्रियों ने भाग लेकर दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोकसंतप्त परिवार को धैर्य धारण करने हेतु प्रार्थना की गई। आचार्य आदि ने सारगर्भित उपदेश दिए। श्री निहालचन्द्र बजाज के सुपुत्र श्री रवीन्द्र कुमार बजाज, सेवा निवृत्त मण्डल लेखा परीक्षा अधिकारी उत्तर मध्य रेलवे ने सभी आगन्तुकों के प्रति अपने परिवार की ओर से कृतज्ञता प्रकट की तथा झांसी की आर्य समाजों तथा अन्य धार्मिक व सामाजि संस्थाओं को पुष्कल धनराशि भेंट की। ओइम शान्ति, शान्ति, शान्ति।

– वेदारी लाल आर्य

गुरूकुल पूठ –गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ में

शोक सभा एवं शान्ति यज्ञ

गुरूकुल पूठ के आश्रम विभाग में वानप्रस्थ–सन्यास आश्रम की व्यवस्था है यहाँ साधक लोग अपनी साधना–स्वाध्याय करते हुए जीवन की सन्ध्या को सुखमय बनाने का पुरूषार्थ करते हैं। इसी क्रम में म० शान्तमुनि (चौ० झमेल सिंह) ग्राम ततारपुर निवासी कई महीनों से रह रहे थे अचानक दस्त लगे। हापुड़ अस्पताल में दिखाया चिकित्सा चल रही थी लेकिन प्रभु की इच्छा बलीयसी ४ मई को मध्यान अन्तिम श्वास लिया गुरूकुल परिवार ने वैदिक परम्परा से अन्तिम संस्कार किया उनका शान्ति यज्ञ एवं शोकसभा गुरूकुल की पवित्र यज्ञशाला में १३ मई को सम्पन्न हुआ जिसमें उनके ग्राम और परिवार से सभी लोगों ने भाग लिया ग्राम ततारपुर से आर्य समाज के प्रधान ओमदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष वीरपाल आर्य, मुनेश आर्य, सत्येनद्र आर्य के साथ सम्बन्धी भी आये थे गुरूकुल के अधिष्ठाता स्वामी अखिलानन्द सरस्वती ने यज्ञ सम्पन्न कराया आ० सुधीर शास्त्री, अ० दिनेश शास्त्री, आ० मोहन लाल, आ० हर्ष देव, आ० कुलदीप शास्त्री ने वेदपाठ किया संचालक स्वामी धर्मेवरानन्द सरस्वती ने उकने जीवन पर प्रकाश डाला और गुरूकुल तथा सभा उ०प्र० की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की प्रचार्य राजीव जी ने सभी आये अतिथियों का आभार व्यक्त किया और गुरूकुल पूठ से अपनी आत्मीयता पूर्ववत् बनाये रक्खें निवेदन किया। आर्य मित्र परिवार भी उनके प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता है

हरीश कुमार शास्त्री

व्यवस्थापक –आर्य मित्र

गुरूकुल आश्रम आमसेना के ब्रह्मचारियों ने स्वर्ण पदक जीतकर गुरूकुल के गौरव को बढ़ाया

– स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

आज से ५० वर्ष से पूर्व उड़ीसा के नवापारा जिले में गुरूकुल आश्रम आमसेना की स्थापना १९६८ ई० में आर्य जगत् के तपस्वी, सन्यासी पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरियाणा से आकर की थी। अब तक इस संस्था से हजारों छात्र–छात्राएं स्नातक बन चुके है बहुत सारे स्नातक शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त कर चुके हैं।

इस वर्ष भी इस परम्परा को गौरव प्रदान किया गुरूकुल के निम्न होनहार मेधावी छात्रों ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से स्वर्ण पदक प्राप्त करके गुरूकुल का गौरव बढ़ाया है। यहाँ व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि विभिन्न विषयों में प्रथम से लेकर एम.ए. (आचार्य) तक विद्याध्ययन की पूर्णतः निःशुल्क व्यवस्था एक तपस्वी, सन्यासी द्वारा की जा रही है। इसी का प्रतिफल है कि आचार्य मनुदेव, (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य), ब्र. श्री निरंजन आर्य (व्याकरणाचार्य), ब्र० श्री राकेश आर्य (व्याकरणाचार्य), आदर्श कन्या गुरूकुल की आचार्या सुश्री पुष्पा जी (वेदाचार्य), ममता जी (व्याकरणाचार्य), गीता जी (साहित्याचार्य) आदि को हरियाणा के महामहिम राज्यपाल ने अपने कर कमलों से स्वर्ण पदक प्रदान करके सम्मानित किया है। इन होनहार छात्रों के गुरूकुल में पहुँचने पर भव्य स्वागत किया गया।

एक बेटा अपने बूढ़े पिता के वृद्धाश्रम एवं अनाथालय में छोड़कर वापस लौट रहा था। उसकी पत्नी ने उसे यह सुनिश्चित करने को फोन किया कि पिता त्यौहार वगैरह की छुट्टी में भी वहीं रहें घर ना चले आया करें! बेटा पलट के गया तो पाया कि उसके पिता वृद्धाश्रम के प्रमुख के साथ ऐसे घुलिमिल कर बात कर रहे हैं जैसे बहुत पुराने और प्रगाढ़ सम्बंध हों.........

तभी उसके पिता अपने कमरे की व्यवस्था देखने के लिए वहाँ से चले गए... अपनी उत्सुकता शांत करन के लिए बेटे ने अनाथालय प्रमुख से पूंछ ही लिया.... ''आप मेरे पिता को कब से जानते हैं?..... मुस्कुराते हुए वृद्ध ने जवाब दिया..... पिछले तीस साल से... जब वो हमारे पास एक अनाथ बच्चे को गोद लेने आए थे!....................

क्यों डरें कि, जिंदगी में क्या होगा? हर वक्त क्यों सोचें कि बुरा होगा, बढ़ते रहें, मंजिलों की ओर हम, कुछ भी न मिला तो क्या? तजर्बा तो नया होगा।

ईमानदारी एक बहुत महंगा उपहार है! इसकी उम्मीद घटिया लोगों से न करें!......

आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन

१८वां आर्य परिवार युवक युवति परिचय सम्मेलन दिनांक ६ जुलाई २०१७ रविवार समय प्रातः १०.०० बजे से प्रारम्भ होगा अतः आप सभी महानुभाव से निवेदन है कि आर्य समाज के परिक्षेत्र में आर्य परिवार के विवाह योग्य युवक युवतियों से पंजीकरण फार्म भरवाकर इस पुनीत कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

स्थान – आर्य समाज बाहरी रिंग रोड

विकास पुरी नई दिल्ली – ११००१८

भवदीय

विनय आर्य – महामंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो० : ९९५८१७४४४१

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

प्रेरक प्रसंग-

न्यायाधीश नील माधव का शान्ति प्राण त्याग

बंगाल के प्रसिद्ध न्यायाधीश श्री नील माधव बन्धोपध्याय जो सत्य निष्ठता के लिए बहुत विख्यात थे। अपने को स्वस्थ बताकर उन्होंने पांच हजार रूपए का बीमा कराया जबकि वे एक रोग से पीड़ित थे। जीवन के अन्तिम समय में नील माधव जी अत्यन्त अशक्त और आकुल व्याकुल थे। उनके प्राण निकल नहीं पा रहे थे। उनसे पूछा गया कि क्या बात है?

उन्होंने कहा – अब से पांच वर्ष पूर्व बीमा के समय डॉक्टरी होने पर मैंने मधुमेह बीमारी को छिपाकर अपने आपको स्वस्थ बताने का मिथ्या व्यवहार किया। बस असत्य आचरण मुझे अशाक्त और बेचैन कर रहा है। बीमा अधिकारी को बुलाया जाए ताकि मैं मेरे इस बीमा पालिसी को रद्द करा दूं।

बीमा ऐजेन्ट को बुलाया गया। ऐजेन्ट ने कहा– आप तो पैसा ले लीजिए, ऐसा तो जीवन में होता रहता है, कागजी कार्यवाही पूरी है।

नील माधवजी ने कहा– मुझे तब तक शान्ति नहीं मिलेगी जब तक मेरा बीमा रद्द नहीं करेंगे क्योंकि मैंने जीवन में कोई पाप नहीं किया यह पाप मुझसे कैसे हो गया, समझ में नहीं आ रहा। अन्ततः बीमा रद्द कर दिया गया। नील माधव जी ने शान्ति का अनुभव किया और देखते ही देखते प्राण त्याग दिये।

जन विश्वास का महत्व

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियन से एक शिष्य ने प्रश्न किया? शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है? दार्शनिक ने उत्तर दिया– पर्याप्त अन्न, अस्त्र–शस्त्र, जनता का विश्वास प्राप्त करके। शिष्य ने पुनः प्रश्न किया– यदि तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़े?

अस्त्र–सस्त्र को दार्शनिक ने कहा। और यदि शेष तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तब?

कनफ्यूशियन गंभीर हो गए, फिर बोले, ऐसी स्थिति में भोजन का त्याग करें। परन्तु भोजन अभाव में कुछ लोग मरेंगें। शिष्य ने पूछा– यदि जनता का विश्वास त्याग दें तो कैसा रहे?

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया, ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। कोई भी शासन, भोजन, और अस्त्र–शस्त्र के अभाव में चल सकता है कुछ दिन, परन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर एक पल भी शासन नहीं टिक सकता। इसलिए जनविश्वास सर्वोपरि है, जनविश्वास शासन की आत्मा है।

चाणक्य नीति

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं, द्रुमालयः पत्रफलाम्बुभोजनम्।
तृणेषु शय्या शतजीर्णवल्कलं, न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्।।

शब्दार्थ– जिस वन में द्रुम–आलयः =वृक्ष ही घर है पत्र–फल–अम्बु–भोजनम्= पत्ते और फलों का भोजन तथा नदी का जल पीकर ही निर्वाह करना होता है तृणेषु शय्या= घास पर सोना है, शतजीर्ण–वल्कलम्= सौ स्थानों से फटे हुए वल्कल वस्त्रों को पहनना है, ऐसे व्याघ्र–गजेन्द्र–सेवितम्=बाध और गजराजों से सेवित वनम्=वन में रहना वरम् =उत्तम है, परन्तु बन्धुमध्ये=अपने बन्धु–बान्धवों के बीच में धनहीन जीवनम्=धन से रहित जीवन अच्छा नहीं है।

भावार्थ– जिस वन में वृक्ष ही घर है, पत्ते और फलों का भोजन तथा नदी–जल पीकर ही निर्वाह करना है, घास पर ही सोना है, और सौ स्थानों से फटे हुए वल्कल वस्त्रों को पहनना है, ऐसे बाघ और गजराजों से भरे वन में रहना अच्छा है, परन्तु अपने बन्धु–बान्धवों के माध्य में धनहीन जीवन अच्छा नहीं है।

विप्रो वृक्षस्तस्य मूलं च सन्ध्या, वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम्।।

शब्दार्थ – विप्रः=ब्राह्मण वृक्षः=वृक्ष है च =और सन्ध्या=सन्ध्या उपासना, परमेश्वर की आराधना, ब्रह्मचिन्तन, तस्य=उस वृक्ष की, मूलम=जड़ है, वेदाः= ऋग्वेदादि चारों वेद उस वृक्ष की, शाखाः=शाखाएं है, धर्म–कर्माणि=धर्म कर्म उसके, पत्रम्=पत्ते हैं, तस्मात्=इसलिए, मूलम्=जड़ के छिन्ने=कट जाने पर शाखा=शाखा एव=भी, न=नहीं रहेगी और न=न पत्रम्=पत्ते ही रहेंगे।

भावार्थ–ब्राह्मणरूपी वृक्ष की जड़ सन्ध्या है, वेद उसकी शाखाएं हैं, धर्म–कर्म उसके पत्ते हैं, अतः प्रयत्नपूर्वक जड़ की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि जड़ कट जाने, नष्ट हो जाने पर शाखा और पत्ते भी नहीं रहते।

माता च कमलादेवी पिता देवो जनार्दनः।
बान्धवा विष्णुभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्।।

शब्दार्थ – कमलादेवी=लक्ष्मी जिसकी माता=माता है च=और जनार्दनः देवः=सर्वव्यापक, आनन्दप्रद परमेश्वर जिसका पिता=पिता=पालक पोषक और रक्षक है च=तथा विष्णु–भक्ताः=परमात्मा के भक्त जिसके बान्धवाः–बन्धु–बान्धव हैं, उसके लिए भुवनत्रयम्=पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यु–ये तीनों लोक स्वदेशः=अपने ही देश के समान हैं।

भावार्थ– लक्ष्मी जिसकी माता है, सर्वव्यापक आनन्दप्रद परमेश्वर जिसका पिता है और परमेश्वर के भक्त जिसके बन्धु हैं, ऐसे मनुष्य के लिए तीनों लोक अपने देश के समान ही हैं।

चारों वेदों के परायण यज्ञ को पूर्ण करने का संकल्प
ऋग्वेद पारायण पूर्ण हुआ

आर्य समाज स्याना के प्रधान श्री नरेन्द्र कुमार आर्य उनकी धर्म पत्नी श्रीमती सुदेश आर्य, उनके पुत्र ऋषि आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आर्या ने मिलकर पछिले वर्ष ऋग्वेद का पारायण प्रारम्भ किया था प्रतिदिन दैनिक यज्ञ में एवं साप्ताहिक में आहुतियाँ लगाते हुए ८ मई सोमवार २०१७ को चारों वेदों की पूर्णाहुति हो गई। प्रारम्भ करते समय भी और समापन पर भी ब्रह्मा के रूप में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री जी उपस्थित रहे वेदपाठी गुरूकुल पूठ से आ० कुलदीप शास्त्री, आ० शिव कुमार शास्त्री, स्याना एवं गुरूकुल च्योटी पुरा की ब्र० रही। स्वामी जी ने परिवार एवं आये हुए यज्ञ प्रेमी महानुभावों को बताया कि जीवन में यह सौभाग्य किसी पुण्यात्मा– धर्मात्मा– परोपकारी दानी– सतोगुणी देवता को ही प्राप्त होता है। ये सारे गुण माता सुदेश आर्या जी में विद्यमान हैं। आप दैनिक याज्ञिक हैं एवं स्वाध्यायशीला परोपकारी दिव्यात्मा हैं। आपके पुत्र–पुत्रवधू पौत्र–पौत्रवधू सभी यज्ञ प्रेमी हैं। सच्चे अर्थों में जीवन को सार्थक किया है। "इयं यज्ञिया ते तनुः" इस वेद वाक्य के आधार पर आप सभी का जीवन यज्ञमय होगा तभी वेद की रक्षा होगी। वेदज्ञान से अज्ञान नष्ट होगा और ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति सम्भव है प्रभो हमें ऐसी, सद्बुद्धि प्रदान करें जो हम सभी यज्ञ प्रेमी बनकर जीवन को यज्ञमय बना सकें आशीर्वाद के बाद सभी ने भोज ग्रहण किया।

प्रदीप शास्त्री

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।